आरती संग्रह

गणेश पूजन के बारे में श्री माताजी की सलाह

सृष्टि की रचना की शुरुआत जिस टंकार से हुई उसी को हम ब्रह्मनाद अर्थात् ओंकार कहते हैं। इस टंकार से जो नाद विश्व में फैला वो नाद पवित्रता का था। सबसे प्रथम परमात्मा ने इस सृष्टि में पवित्रता का संचार किया। सब वातावरण को पवित्र कर दिया।

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी
(सहज योग संस्थापिका एवं कुण्डलिनी जागरण द्वारा आत्म–साक्षात्कार दात्री)

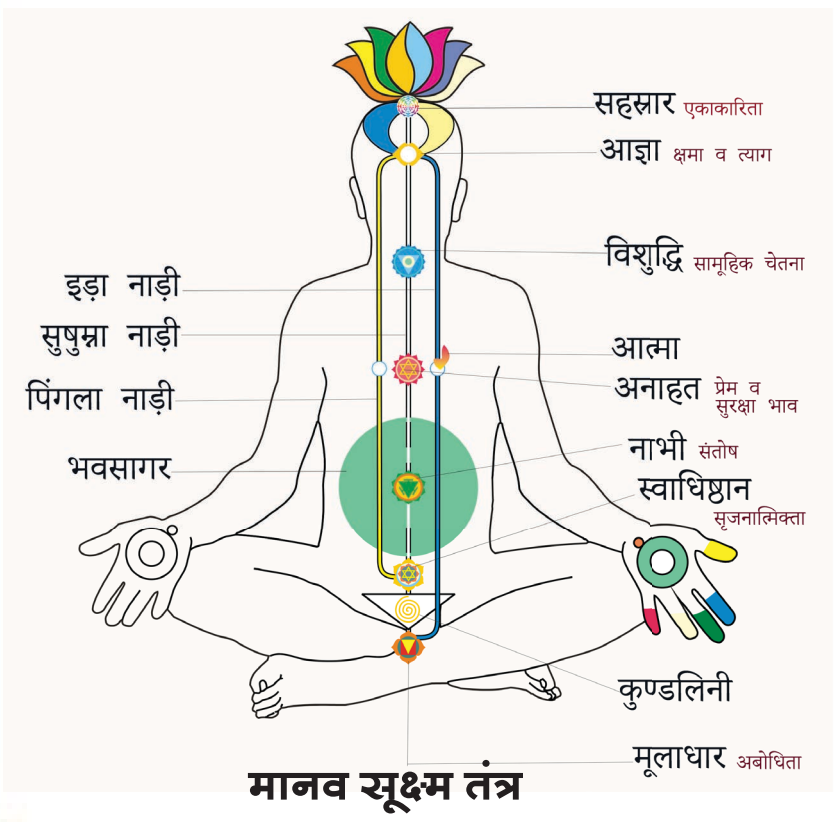

मानव सूक्ष्म तंत्र

श्री गणेश की पूजा हर पूजा में हम लोग करते हैं। लेकिन जब हम किसी की पूजा करते हैं तो हमारी विविध प्रकार की मांगें होती हैं - कुछ लोग कामार्थी होते हैं, कुछ लोग पैसा मांगते हैं। कुछ लोग कहते हैं हमारा कार्य ठीक से हो जाये, कुछ कहते हैं कि हमारी दुनिया में बड़ी शोहरत हो जाए, हमें बड़ा मान मिले। कोई कहता है कि हमारी नौकरी अच्छे से चले। कोई कहता है कि हमारा बिज़नेस चलना चाहिए। कोई कहता है कि हमारे मकान बनने चाहिए। ये सब कामार्थ की बातें हैं। और इसी तरह की मांगों के लिए मनुष्य गणेश की पूजा करता है। सब लोग सिद्धिविनायक के पास जाकर कहते हैं हमें यह चीज दे दो, हमें वो चीज दे दो, लेकिन यह सिद्धि विनायक है। ये चीजे देने वाला नहीं हैं। उसके लिए दुनिया में बहुत से चमत्कार करने वाले बैठे हैं जो आपको हीरे दे देगें, पन्ने दे देंगे और आपका सर्वस्व छीन लेगें। ओंकार स्वयं निराकार है उसका कोई आकार नहीं है। सो सर्वप्रथम जो श्री गणेश का आकार था वो निराकार था। आज हम उनकी साकार में पूजा करते हैं।

लेकिन हमें जानना चाहिए कि हमारे जीवन का अन्तिम लक्ष्य क्या है ? हम क्या चाहते हैं, उसकी पूर्ति हमने की है ? चुनाव में जीत जायें यह तो सभी मांगते हैं। इसमें कौन सी विशेषता है?

फिर यह बात आती है कि जिस गणेश को आप आज पूजते हैं साकार में, उसे निराकार में प्राप्त करना है। उसको अपने अन्दर प्राप्त करना है, अपने अन्दर बिठाना है। यह नहीं कि गए और उनको फूल चढ़ा आए। ये तो सभी करते हैं। उनकी पूजा कर ली। लेकिन उनकी शक्ति आप अपने अंदर समाहित कर सकते हैं। आप उससे अपने चित्त को, अपने मन को, बुद्धि को, वाणी को भी शुद्ध कर सकते हैं।

गणपति उत्सव के मैंने जो किस्से सुने तो मैं आवाक रह गयी कि गणपति के सामने शराब पीते हैं, वहां बैठ कर शराब पीते हैं। गन्दे-२ गाने गाते हैं। उनके आगे गन्दे-२ नृत्य करते है। और सब गन्दी तरह की औरतें वहां जमीं रहती हैं। और सब तरह के धन्धे करते हैं। ये तो गणपति की विडम्बना हो गयी। ये तो अच्छे भले लोगों को खराबी के रास्ते पर ले जाने की पूरी व्यवस्था हो गयी है। जितना बड़ा गणपति उतना ही वहाँ पाप ज़्यादा। और ऐसे गणपति के सामने पाप करने से वो कोई छोड़ेंगे? वो इन लोगों को छोड़ने वाले नहीं । क्योंकि वो जानते हैं कि कहां-२ काम करना है। और कहां मेहनत करनी है।

तो सर्वप्रथम हमने अपने अन्दर गणेश जी को जगाना है सिर्फ पूजा मात्र ही नहीं हमें उन्हें अगर जगाना है तो सर्वप्रथम हमें देखना चाहिए कि हमें शुद्ध होना है। हमारे अन्दर शुद्धता आनी चाहिए। सबसे पहली शुद्धता है कि हमारी जो मौलिक बातें हैं उसकी ओर घ्यान देना हैं। आजकल सिनेमा और आजकल की सब चीजें आने से हमारी आंखे तक खराब हो गयी । और वो अबोधिता, वो निश्चल और निर्वाज्य त्याग संसार से मिट गया है। कोई सोच भी नहीं सकता कि ऐसा कोई कर सकता है।

हालांकि आजकल आप लोग दुनिया में देखते हैं कि बहुसंख्य लोग ऐसी औरतों को मानते हैं जो बिल्कुल गंदगी से लबालब हैं। जिनमें पवित्रता छुई भी नहीं। अत: ये बहुसंख्य नर्क की ओर जा रहे हैं। इनका जो हाल होने वाला है वो मुझे आज ही दिखाई दे रहा है। हमारी नैतिकता ठीक होनी आवश्यक है।

यह प्रस्तुति आप तक सहज योगियों की टीम द्वारा लाई गई है।
sahajayoga.org | sahajayoga.org.in | nirmaldham.org | sahajayogamumbai.org

एम बी रत्नन्नावार और सहज योग टीम ने संपादित किया है। Email: mbratan@gmail.com

सुखकर्ता दु:खहर्ता

सुखकर्ता दु:खहर्ता वार्ता विघ्नाची । नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची ।।
सर्वांगी सुंदर उटी शेंदुराची । कंठी झळके माळ मुक्ता फळांची ।।१।।
जय देव, जय देव जय मंगलमूर्ती। दर्शनमात्रे मन कामना पुरती ।।धृ।।
रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा । चंदनाची उटी कुमकुम केशरा ।।
हिरेजडित मुकुट शोभतो बरा । रुणझुणती नूपुरे चरणी घागरिया ।।२।।
जय देव, जय देव जय मंगलमूर्ती। दर्शनमात्रे मन कामना पुरती ।।धृ।।
लंबोदर पितांबर फणिवरबंधना । सरळ सोंड वक्रतुंड त्रिनयना ।।
दास रामाचा वाट पाहे सदना । संकटी पावावे, निर्वाणी रक्षावे, सुरवरवंदना ।।३।।
जय देव, जय देव जय मंगलमूर्ती। दर्शनमात्रे मन कामना पुरती ।।धृ।।

शंकराची आरती

लवथवती विक्राळा ब्रह्मांडी माळा । वीषें कंठ काळा त्रिनेत्रीं ज्वाळा ।।
लावण्यसुंदर मस्तकीं बाळा । तेथुनियां जल निर्मळ वाहे झुळझूळां ।। १ ।।
जय देव जय देव जय श्रीशंकरा । आरती ओवाळूं तुज कर्पूरगौरा ।। ध्रु० ।।
कर्पूरगौरा भोळा नयनीं विशाळा । अर्धांगीं पार्वती सुमनांच्या माळा ।।
विभुतीचें उधळण शितिकंठ नीळा । ऐसा शंकर शोभे उमावेल्हाळा ।। जय देव० ।। २ ।।
देवीं दैत्य सागरमंथन पै केलें । त्यामाजीं जें अवचित हळाहळ उठिलें ।।
तें त्वां असुरपणें प्राशन केलें । नीळकंठ नाम प्रसिद्ध झालें ।। जय देव० ।। ३ ।।
व्याघ्रांबर फणिवरधर सुंदर मदनारी । पंचानन मनमोहन मुनिजनसुखकारी ।।
शतकोटीचें बीज वाचे उच्चारी । रघुकुळटिळक रामदासा अंतरीं ।। जय देव जय देव० ।। ४ ।।

श्री देवीची आरती

दुर्गे दुर्घट भारी तुजविण संसारी । अनाथनाथे अंबे करुणा विस्तारी ।।
वारी वारीं जन्ममरणाते वारी । हारी पडलो आता संकट नीवारी ।। १ ।।
जय देवी जय देवी जय महिषासुरमथनी ।
सुरवरईश्वरवरदे तारक संजीवनी ।। धृ. ।।
त्रिभुवनी भुवनी पाहतां तुज से नाही । चारी श्रमले परंतु न बोलावे काहीं ।।
साही विवाद करितां पडिले प्रवाही । ते तूं भक्तालागी पावसि लवलाही ।। २ ।।
प्रसन्न वदने प्रसन्न होसी निजदासां ।
क्लेशापासूनि सोडी तोडी भवपाशा ।।
अंबे तुजवांचून कोण पुरविल आशा । नरहरि तल्लिन झाला पदपंकजलेशा ।। ३ ।।

आरती विठ्ठलाची

युगे अठ्ठावीस विटेवरी उभा वामाङ्गी रखुमाईदिसे दिव्य शोभा ।
पुण्डलिकाचे भेटि परब्रह्म आले गा चरणी वाहे भीमा उद्धरी जगा ।।१।।
जय देव जय देव जय पांडुरंगा । रखुमाई वल्लभा राईच्या वल्लभा पावे जिवलगा ।।धृ०।।
तुळसीमाळा गळा कर ठेऊनी कटी कासे पीताम्बर कस्तुरी लल्लाटी ।
देव सुरवर नित्य येती भेटी गरुड हनुमन्त पुढे उभे राहती ।।२।।
धन्य वेणूनाद अणुक्षेत्रपाळा सुवर्णाची कमळे वनमाळा गळा ।
राई रखुमाबाई राणीया सकळा ओवाळिती राजा विठोबा सावळा ।।३।।
ओवाळू आरत्या कुरवण्ड्या येती चन्द्रभागेमाजी सोडुनिया देती ।
दिण्ड्या पताका वैष्णव नाचती पण्ढरीचा महिमा वर्णावा किती ।।४।।
आषाढी कार्तिकी भक्तजन येती चन्द्रभागेमाजी स्नाने जे करिती।
दर्शन होळामात्रे तया होय मुक्ति केशवासी नामदेव भावे ओवाळिती ।।५।।
जय देव जय देव जय पांडुरंगा । रखुमाई वल्लभा राईच्या वल्लभा पावे जिवलगा ।।धृ०।।

श्री दत्ताची आरती

त्रिगुणात्मक त्रैमूर्ती दत्त हा जाणा। त्रिगुणी अवतार त्रैलोक्य राणा ।
नेती नेती शब्द न ये अनुमाना।। सुरवर मुनिजन योगी समाधी न ये ध्याना ।। १ ।।
जय देव जय देव जय श्री गुरुदत्ता । आरती ओवाळिता हरली भवचिंता ।। धृ ।।
सबाह्य अभ्यंतरी तू एक दत्त । अभाग्यासी कैची कळेल हि मात ।।
पराही परतली तेथे कैचा हेत । जन्ममरणाचाही पुरलासे अंत ।। २ ।।
दत्त येऊनिया ऊभा ठाकला । भावे साष्टांगेसी प्रणिपात केला ।।
प्रसन्न होऊनि आशीर्वाद दिधला । जन्ममरणाचा फेरा चुकवीला ।। ३ ।।
दत्त दत्त ऐसें लागले ध्यान । हरपले मन झाले उन्मन ।।
मी तू पणाची झाली बोलवण । एका जनार्दनी श्रीदत्तध्यान ।। ४ ।।

आरती साईबाबाची

आरती साईबाबा । सौख्यदातार जीवा। चरणरजातली ।
द्यावा दासा विसावा, भक्ता विसावा ।। आ०।।ध्रु ०।।
जाळुनियां अनंग। स्वस्वरूपी राहेदंग । मुमुक्षूजनां दावी निज डोळा श्रीरंग ।। आ०।। १ ।।
जयामनी जैसा भाव । तया तैसा अनुभव। दाविसी दयाघना । ऐसी तुझीही माव ।। आ०।। २ ।।
तुमचे नाम ध्याता। हरे संस्कृती व्यथा ।
अगाध तव करणी। मार्ग दाविसी अनाथा ।। आ०।। ३ ।।
कलियुगी अवतार । सगुण परब्रह्मः साचार ।
अवतीर्ण झालासे । स्वामी दत्त दिगंबर ।। द०।। आ०।। ४ ।।
आठा दिवसा गुरुवारी । भक्त करिती वारी । प्रभुपद पहावया । भवभय निवारी ।। आ०।। ५ ।।
माझा निजद्रव्यठेवा । तव चरणरज सेवा ।
मागणे हेचि आता । तुम्हा देवाधिदेवा ।। आ०।। ६ ।।
इच्छित दिन चातक। निर्मल तोय निजसुख ।
पाजावे माधवा या । सांभाळ आपुली भाक ।। आ०।। ७ ।।

घालीन लोटांगण

घालीन लोटांगण, वंदीन चरण । डोळ्यांनी पाहीन रुप तुझें ।
प्रेमें आलिंगन, आनंदे पूजिन । भावें ओवाळीन म्हणे नामा ।।१।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव। त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विध्या द्रविणं त्वमेव । त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।२।।
कायेन वाचा मनसेंद्रीयेव्रा, बुद्धयात्मना वा प्रकृतिस्वभावात ।
करोमि यध्यत सकलं परस्मे, नारायणायेति समर्पयामि ।।३।।
अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं, जानकीनायकं रामचंद्र भजे ।।४।।
हरे राम हर राम, राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।

मंत्रपुष्पांजली

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजंत देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन।
ते हं नाकं महिमानः सचंत यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्ये साहिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे
स मे कामान्कामकामाय मह्यम। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय । महाराजाय नमः ॐ स्वस्ति
साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं समंतपर्यायी
स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष आंतादापरार्धात्पृथिव्यै समुद्रपर्यंता या एकराळिति
तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति
एकदंतायविद्महे वक्रंतुडाय धीमहि तन्नोदंती प्रचोदयात्

- Agro Tourism
- Chulghar- Huts Restaurant
- AC Dining Hall
- Wedding and Event Lawn
- Accommodation
- Conference Hall
- Amrai

निसर्गरम्य वातावरणात
सहजयोग ध्यान कार्यशाळा
आणि प्रशिक्षणाचे उत्तम स्थान
मायभुमी अॅग्रो रिसॉर्ट

Contact : 8454880906/ 8369559017/ 9022953904
www.mybhumiagroresort.com